Sanskrit (Honours)
B.A. (Ist Part)

Date - 17/7/2020

डॉ० लक्ष्मी राम मिश्र
अतिथि शिक्षक
विभाग - संस्कृत
आर० डी० एस० कॉलेज, मुजफ्फरपुर
बिहार राज्य

मेघदूतम् (पूर्वमेघः) -

पूर्वोक्त श्लोक का तात्पर्य यह है कि धूम, अग्नि, जल एवं वायु के संघात से ही मेघ का निर्माण होता है, अतः ये सभी तो निर्जीव हैं, दर्शनशास्त्र के अनुसार तो निर्जीव से सजीव का निर्माण तो हो ही नहीं सकता। सन्देश तो ऐसे व्यक्ति से भेजा जाता है जिनकी इन्द्रियाँ चतुर हों तथा उनमें वक्तृत्व शक्ति हो। उन्हें सन्देश भेजने वाले तथा सन्देश प्राप्त करने वाले दोनों की मनोवृत्तियों के बारे में पता हो। परन्तु वह यक्ष अपनी प्रेयसी के लिए इतना कामार्त हो गया था कि वह चेतन एवं अचेतन में भेद नहीं कर सकता था।

स्पष्ट रूप से महाकवि का उद्देश्य रतिरसज्ञों के लिए एक रसमय काव्य एवं गीतिकाव्य की रचना तो है ही, साथ ही वे यह बताने में भी सफल रहे हैं कि किसी के अत्यधिक शारीरिक प्रेम मनुष्य को कर्तव्य भ्रष्ट तो करता ही है, उसे मानसिक रूप से कमजोर भी बना देता है। वह पागलपन की हद तक जा सकता है एवं इसके लिए नैतिकता एवं अनैतिकता का भेद भी मिटा देता है। अतः इस प्रकार के शारीरिक प्रेम पर नियन्त्रण आवश्यक है।

अस्तु हम मेघदूत की विषय वस्तु की बात कर रहे हैं। यक्ष मेघ को अपने सन्देशवाहक के रूप में

सुनने के बाद उसकी विरहित कुटज पुष्पों से पूजन करने के उपरान्त रामगिरि पर्वत से अलकापुरी, जहाँ उसकी प्रेयसी रहती है, का रास्ता बतलाता है। रास्ता बतलाने के क्रम में महाकवि ने रामगिरि पर्वत से अलकापुरी तक समग्र भौगोलिक वर्णन किया है, वह भी रहस्यमय एवं प्राकृतिक परिवर्तनों से भरपूर। इसे देखकर इस पर विश्वास करना मुश्किल होता है कि प्राचीन काल में किसी के पास इतना विशद भौगोलिक ज्ञान हो सकता है! महाकवि अच्छी तरह जानते हैं कि अलकापुरी रामगिरि पर्वत से किस दिशा में है, तथा मेघ की गति की तीव्रता के लिए हवा का होना भी आवश्यक है-

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयन सुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥

अर्थात् अनुकूल पवन मेघ को धीरे ही ले जा रहा है। कालिदास को मालूम है कि मध्यभारत में मानसून की स्थिति बड़ी विचित्र होती है, वहाँ चार मानसून परम्पराएँ सक्रिय रहती हैं, सभी हमेशा उत्तर की ओर नहीं जा सकती हैं, अतः उसे इन्तजार करना पड़ता है। मानसून की एक धारा जो उड़ीसा के तट से छत्तीसगढ़ में प्रवेश करती है वह वहाँ के रामगिरि पर्वत होते हुए उत्तर-उत्तर-पश्चिम की ओर आती है।

Rukmini Ram Pal
17/7/2020

— क्रमशः —